भजन

तर्ज : छुप गये तारे नजारे

सहेब आये हमारे, जय–जयकार हो रही
मेहर नजर से मेहर की बरसात हो रही
लीला न्यारी तुमारी अपरम्पार हो रही,
मुझपे किरपा तुमारी बार–बार हो रही

1. निजघर वाले धनीजी हमारे, हो तुम ही सतगुरु प्यारे
नर तन धारा है, आ कर तुमने यहाँ
खिलवत अपनी दिखाई, है तुमने यहाँ
साथ जगाया, बुलाया, क्या कमाल हो रही
मेरे सतगुरु की लीला साकार हो रही

2. रूहों ने जाना, धनी तुमें माना, है आतम से पहचाना
नूरे अर्श तुमीं में समाया है, मूल स्वरूप तुमीं ने दरशाया है
आतम मेरी ये तेरी तलबगार हो रही
मुझको तेरी बस तेरी, दरकार हो रही

3. निसबत बिना भला ये जमाना, ना पायेगा ये ठिकाना
तेरी मेहरों करम मुझपे कायम है
मेरी आतम का तूं ही खावन्द है
रूप तिहारा है प्यारा, जाँ निसार हो रही
आज दिल से इस दिल की, हर बात हो रही